हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

HL-A-DTVF-17

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): Chetan kumar

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 16-07-2017 (test-No: 1)

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 2 5 4 8 0 2

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Chetan

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 111½

टिप्पणी (Remarks): प्रयास अच्छा है। कुछ उत्तरों हेतु अध्ययन अपेक्षित है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'A'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) पहाड़ी हिंदी

पहाड़ी हिन्दी का विकास 'शौरसेनी अपभ्रंश' से माना जाता है। पहाड़ी हिन्दी मुख्यत: जम्मू कश्मीर के जम्मू क्षेत्र, उत्तराखंड के क्षेत्र तथा हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा क्षेत्र में बोली जाती है।

पहाड़ी हिन्दी में राजस्थानी व हरियाणवी की तरह न तो ओज व अक्खड़ता है और न ही ब्रज की तरह कोमलता। बल्कि यह इन दोनों का मिश्रण प्रतीत होती है। पहाड़ी हिन्दी पर कश्मीरी तथा पंजाबी का प्रभाव भी स्पष्टत: देखा जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अवधी के अरघान जायसी

जायसी हिन्दी साहित्य में जिन कारणों से चिर स्मरणीय हैं, उनमें उनका अवधी भाषा को दिया गया अवदान है। जायसी ने पद्मावत, कन्हावत जैसी रचनाओं के माध्यम से ठेठ अवधी को पूरी सघनता से पेश किया है।

जायसी सूफी काव्य परंपरा के प्रतिनिधि कवि हैं, जिनकी भाषिक क्षमताओं को अकेले जायसी में समेकित किया जा सकता है। उनकी "ठेठ अवधी" का एक नमूना है -

"मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी, नाहि तो काह छार एक मूँठि।"

~~अवधी~~ जायसी की अवधी की खास बात है कि उन्होंने ~~फारसी~~ सूफी परंपरा की तकनीकी शब्दावलियों, फारसी व अरबी के शब्दों को इतनी सूक्ष्मता से अवधी में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बुलाया है कि किसी सामान्य पाठक के लिए उन्हें ढूँढ पाना मुश्किल है।

5/10
बेहतर बनायें
मॉडल उत्तर देखें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) हिन्दी भाषा-क्षेत्र

हिन्दी भाषा का उद्गम संस्कृत से हुआ है। तालीकरण की प्रक्रिया में संस्कृत पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट, पुरानी हिन्दी के जरिये आगे बढ़ी और विभिन्न भाषिक संबंधों से गुजरकर वर्तमान स्वरूप प्राप्त किया।

जहाँ तक बात हिन्दी भाषा के क्षेत्र की है यह मुख्यतः उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विविध बोलियों व उपभाषाओं के माध्यम से फैला है। ~~पंजाबी में हिन्दी~~

पंजाबी, मराठी, बंगाली, नेपाली, आदि हिन्दी की विविध उपभाषाएँ हैं। वहीं पहाड़ी, शौरसेनी, राजस्थानी, ब्रज, अवधी, मेवाती, मेवाड़ी, मारवाड़ी, मैथिली, भोजपुरी इत्यादि विविध बोलियाँ हैं। इन क्षेत्रों में हिन्दी में काफी अंतर मिल जाता है, किन्तु मुख्यतः लहजे व शब्दों के स्तर पर, जो कि स्थानीय प्रभावों के कारण भिन्नता लिए हुए हैं।

शौरसेनी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः हिन्दी का भाषा क्षेत्र अत्यंत व्यापक व विस्तृत है, जो आधुनिक हिन्दी के माध्यम से विभिन्न बोलियों एवं उपभाषों की विविधता में एकता को धारण करती है।

उपभाषाओं

विदेशी क्षेत्र को बताएँ। अपेक्षा अनुरूप

3/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) मध्यकाल में काव्यभाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

काव्यभाषा के रूप में सर्वप्रथम ब्रज भाषा का प्रयोग खुशरो (खुसरो) के यहाँ दिखता है-

"गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डारै केश।
चल खुशरो घर आपने, रैन भई चहुँ देश॥"

किन्तु, खुशरो ब्रजभाषा का प्रयोग आधिक प्रयोग के रूप में पहली बार कर रहे थे। किन्तु, स्थापित रूप से ब्रजभाषा को काव्यभाषा के रूप में पहचान भक्तिकाल में मिलती है। भक्तिकाल में कबीर जैसे संतों के यहाँ शब्दावली के स्तर पर तो ब्रजभाषा आती है, किन्तु पूर्णता की स्थिति यह कृष्ण काव्य धारा व राम काव्य धारा में दिखाई देती है।

ब्रजभाषा के साहित्य में प्रयोग की दृष्टि से कृष्ण काव्य धारा अहम् है। सूर ने कृष्ण की जिन बाललीलाओं व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

प्रेमलीलाओं को सूक्ष्मता से उकेरा है, वह ब्रज भाषा की कोमलकांत पदावली के कारण ही हुआ है। ब्रज भाषा को लेकर सूर के अवदान को स्पष्ट करते हुए शुक्ल जी कहते हैं कि 'एक चलती हुई भाषा' को अचानक से उठाकर सूर ने काव्य भाषा के रूप में परिवर्तित कर दिया। सूर की ब्रजभाषा का एक नमूना है -

" मधुबन तुम क्यों रहत हरे।
विरह वियोग श्याम सुंदर के ठाडे क्यों न झरे।
तुम हो निलज लाज नही तुमको सिरि सिरि पुहुप धरे।।"

ब्रज भाषा का प्रयोग आगे चलकर तुलसी अवधी के साथ मिलाकर करते हैं। ~~तौ~~ ~~न~~ ~~मिलाना~~ ~~कौ~~. किन्तु ब्रजभाषा रीतिकाल में जाकर हिन्दी साहित्य पर एकाधिकार जमा लेती है। पूरे हिन्दी भाषी क्षेत्र में एकमात्र काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होती है। बिहारी से लेकर भारतेंदु सरीके रचनाकार ब्रज को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

अपने मुकाम तक पहुँचाते तक पहुँचाते है।
बिहारी ने तो ब्रज का ऐसा प्रयोग किया है, कि उनका शिल्प चमत्कृत हो गया है-

"कहत नटत रीझत खीजत
मिलत खिल लजियात।
भरे भौन में करत है
नैनन हीं सौ बात॥"

भारतेन्दु काल तक ब्रज भाषा अपना पैर साहित्य के क्षेत्र में जमाए रखी है।

इस प्रकार मध्यकाल में जाकर ब्रजभाषा ने जो मुकाम हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में प्राप्त किया, वह अन्य किसी के लिए प्राप्त करना मुश्किल दिखाई पड़ता है।

11/20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक्त न लिखें।
(Please do not write anything except question number this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बुंदेली बोली के भौगोलिक क्षेत्र पर प्रकाश डालते हुए उसकी भाषिक विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। 15

~~बुंदेलीबोली~~ भारत में उत्तर भारत के बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बोली जाती है, जो मुख्यतः उत्तरप्रदेश व ~~मध्यप्रदेश~~ में स्थित है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्र
संख्या के अतिरिक्त क
न लिखें।
(Please do not wr
anything except
question number
this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भाषा के धरातल पर हिन्दी को अपभ्रंश का अवदान बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अपभ्रंश का हिन्दी को अवदान बेहद महत्वपूर्ण है। वस्तुतः संस्कृत से भाषायी जकड़बद्धता टूटने की जो परंपरा शुरू हुई, उसमें अपभ्रंश ने काफी योगदान हिन्दी को प्रदान किया।

अपभ्रंश का हिन्दी भाषा के विकास में योगदान निम्न बिंदुओं में देखा जा सकता है-

1. अपभ्रंश ने वर्तमान हिन्दी के स्वरों के स्तर पर अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ को प्रदान किया।
2. व्यंजनों के स्तर पर वर्तमान हिन्दी के ङ, ञ, न, श, ज को छोड़कर सभी व्यंजनों को ~~प्रदान~~ हिन्दी को प्रदत्त किया।
3. अन्त्य व्यंजन के लोप से वर्तमान हिन्दी के कई शब्द बने, जो अपभ्रंश की देन है। जैसे 'महान्' → 'महा'

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(4) ~~अ~~ व्याकरण के स्तर पर देखा जाये तो संबंध कारक की विभक्ति 'का' को हिन्दी को अपभ्रंश नहीं प्रदान किया है।

वस्तुतः संस्कृत से आंशिक तौर पर विभक्तियों के प्रयोग की परंपरा अपभ्रंश से ही दिखाई देती है।

संस्कृत के तीन वचनों (एक वचन, बहुवचन, द्विवचन) को दो वचनों (एकवचन, बहुवचन) में परिणत करने का काम अपभ्रंश ने किया। अपभ्रंश में द्विवचन, बहुवचन में ही समाहित हो गया।

इसी प्रकार लिंग के आधार पर संस्कृत के तीन लिंगों (स्त्रीलिंग, पुलिंग, नपुंसकलिंग) को अपभ्रंश ने दो (स्त्रीलिंग, पुलिंग) में रूपान्तरित किया और नपुंसक लिंग को पुलिंग में शामिल कर भाषा का सरलीकरण किया, जो हिन्दी में अभी तक मान्य है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सर्वनाम के स्तर पर 'तू', 'तुम्हें' का प्रयोग सर्वप्रथम अपभ्रंश में दिखता है, जो कि आधुनिक हिन्दी में भी प्रचलित है।

(5) शब्दावली के स्तर पर देखा जाये तो अपभ्रंश अनेक शब्दों का संस्कृत से तद्भवीकरण किया जो अभी तक मान्य है। विदेशज शब्दों का पहली बार हिन्दी में स्वीकरण अपभ्रंश ने किया। (जैसे तहसीलदार) यह प्रवृत्ति अभी भी जारी है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि अपभ्रंश भाषा न होती तो संभवतः हिन्दी के वर्तमान स्वरूप को देखने से हम वंचित रह जाते।

11/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

SECTION 'B'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिए: $10 \times 5 = 50$

(क) विद्यापति की सौंदर्य चेतना का वैशिष्ट्य

विद्यापति आदिकाल के विशिष्ट कवि हैं। वे एक ऐसे समय में जब अधिकांश कवि दरबारी लालच में पड़कर अप्रमाणिक व राजाओं की प्रशस्ति तक सीमित थे, तब विद्यापति ने दरबार में रहकर उनके प्रभाव से प्रभावित न होकर कार्यकर्म किया।

विद्यापति की 11 रचनाओं में से 3 हिन्दी साहित्य से जुड़ी हैं, जिनमें हैं- कीर्तिलता, कीं कीर्तिपताका तथा पदावली।

कीर्तिलता व कीर्तिपताका राजा कीर्तिसिंह के दरबार में रहकर रची, जिसमें कीर्तिपताका अप्राप्य है, किन्तु अन्य लेखों से पता चला है कि उन्होंने रास कथा पर अपनी लेखनी चलाई। विद्यापति की ख्याति का मूलाधार पदावली है, जिसमें उन्होंने राधा कृष्ण की कथा का अत्यंत मार्मिक व

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रसात्मक चित्रण किया है। इसमें भक्ति व शृंगार का अद्भुत समन्वय है, जिसके कारण इसे ~~भक्ति तथा~~ शृंगार समन्वित भक्ति काव्य भी कहते हैं। इस रचना में विद्यापति ने गीता के बजाय गीतगोविंद व गाथासप्तशती के कृष्ण को लिया है, जिसमें उनके वियोग व संयोग शृंगार दोनों पक्षों का वर्णन है। इस रचना में राधा कृष्ण की सौंदर्यता अद्भुत है।

3/10

प्रश्नानुरूप उत्तर लिखें

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) अज्ञेय की कहानियों की शिल्पगत विशेषताएँ

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अज्ञेय मूलतः मनोविश्लेषणवादी कहानीकार हैं। उन्होंने मनोविश्लेषण की जो धार धार प्रसाद ने क्षीण मात्रा में शुरु की, उसमें फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवाद का तड़का लगाकर उसे तेजी से प्रवाहित किया।

अज्ञेय अपनी कहानियों के प्रतिपाद्य को लेकर ~~वि~~ जितने चर्चित रहे उतने ही अपने शिल्प के कारण भी। उनकी प्रमुख शैल्पिक विशेषता निम्न हैं -

① अज्ञेय की कहानी में पूर्व की तरह कथानक का आदि, ~~अंत~~ मध्य तथा अंत लिए कसा हुआ कथानक नहीं मिलता। उनका कथानक टूटा हुआ है, जो परिस्थितियों के विश्लेषण, चिंतन, मनन के माध्यम से आगे बढ़ता है।

② चरित्र के स्तर पर भी अज्ञेय ने मौलिक कल्पनाएँ की हैं। उनके चरित्र 'वर्गगत' न होकर 'व्यक्तिगत' हैं जो समाज के बजाय अपने

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आप से संघर्ष करते हैं। चरित्र अपनी कामनाओं, इच्छाओं व यौन चेतना व कुंठा से जूझते नजर आते हैं। चरित्र अपनी परिस्थितियों से लड़ते लड़ते टूटने को मजबूर हो जाते हैं।

(3) भाषा के ~~स्तर~~ स्तर पर अज्ञेय ~~भाषि~~ नये प्रयोग करते हैं। मन की परतों का विश्लेषण करने के कारण उनकी भाषा दार्शनिकता, अमूर्तता व प्रतीकात्मकता ग्रहण करती है। भाषायी औदात्य व आभिजात्यता सर्वत्र मिलती है तथा पात्र अपनी स्थिति के अनुरूप भाषा बोलते हैं।

कुल मिलाकर अज्ञेय अपनी शिल्पगत विशेषताओं से न केवल अपने को कहानी के क्षेत्र में दृढ़ता से स्थापित करते हैं, बल्कि 'नई कहानी' जैसे सशक्त कहानी आंदोलन की 'रोज' कहानी के जरिये पूर्व पीठिका प्रदर्शित करते हैं।

5½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इप्टा

आजाद भारत से पूर्व हिन्दी रंगमंच को प्रसिद्धि दिलाने में जिन संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है उनमें इप्टा प्रमुख है। इप्टा की स्थापना 1943 में इंडियन पीपल्स थियेटर एसोसिएशन के रूप में हुई थी।

इप्टा के माध्यम से अनेक प्रगतिशील चेतना वाले नाटकों को देश भर में प्रदर्शित किया गया। उस दौर के अधिकांश प्रगतिशील नाटककार व निर्देशक इप्टा से जुड़े हुए थे। इप्टा ने 'पृथ्वी थियेटर' के साथ मिलकर भारत में हिन्दी रंगमंच को जन जन तक पहुँचाने का काम किया।

इप्टा की अपनी स्वयं की रंगमंडली थी, जिसमें अनेकों मँझे हुए कलाकार थे। ये जगह जगह जाकर प्रस्तुति देते थे। इप्टा की खास विशेषता इनकी दृश्य योजना,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स
संख्या के अ
न लिखें।
(Please do
anything
question
this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गीत योजना व अभिनय कौशल था। इसने आजादी के बाद भी अपनी उपस्थिति बनाए रखी।

कुल मिलाकर, जब हिन्दी नाटक रचनाकर्म के स्थल से रंगमंच की तलाश कर रहा था, तब इप्टा ने उसे सशक्त सहारा दिया और हिन्दी नाटकों को देशभर में लोकप्रिय बनाया और पारसी थियेटर की हल्की मनोरंजनता से लोगों को जोड़ा।

5½/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अकहानी की विशेषताएँ

'अकहानी' हिन्दी कहानी का अहम आंदोलन है। इसकी शुरुआत 'नई कहानी' के विरोध में हुई। यह फ्रांस के 'एन्टी स्टोरी मूवमेन्ट' से प्रेरित था।

अकहानी अपनी संवेदनागत तथा शिल्पगत विशेषताओं के कारण विशिष्ट है।

संवेदनागत विशेषताएं

(1) अकहानी का मूल भाव है परंपराओं का पूर्ण नकार। अकहानीकार न केवल पहले से चली आ रही परंपराओं को अस्वीकृत करते हैं बल्कि उससे घृणा करते हैं प्रतीत होते हैं।

(2) जीवन के प्रति गहरी अनास्था इसकी अन्यतम विशेषता है। इसमें जीवन को अस्वीकृत, बोझ के रूप में देखा जाता है। यहाँ जीवन में सर्वत्र निराशा, उकताहट, हार व आत्मविलगन दिखाई देता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) 'अकहानी' अतिशय आधुनिकता पर बल देती है। जिसके कारण यह भारतीय मान्यताओं को पुनर्विवेचित करती है तथा पश्चिम की अति नकल करती सी प्रतीत होती है। यहाँ तक कि बूढ़े माँ बाप के प्रति भी अनास्था का भाव दिखता है।

(4) अकहानी यौन वर्जनाओं का नकार करती है। यहाँ परस्त्री गमन व परपुरुषगमन तक ही बात सीमित नहीं रहती, अपितु समलैंगिक संबंध व पशु संपर्क के चित्र भी दिखाई दे जाते हैं।

शिल्पगत विशेषता

अकहानी शिल्प के परंपरागत ढांचे को पूरी तरह अस्वीकृत कर देती है तथा नयी विशेषताओं के प्रति भी उदासीन भाव रखती है। यहाँ कथानक बुरी तरह टूटा हुआ है, कथानक को अमूर्त बनाने के लिए पात्रों के नाम तक नहीं हैं, बल्कि क, ख, ग के रूप में संकेतित हैं।

शैली के स्तर पर जादुई यथार्थवाद, आत्मप्रलाप, डायरी, फ्लैशबैक आदि को अपनाती है।

निष्कर्ष: 'अकहानी' हिन्दी कहानी का नया प्रयोग था, जिसने कहानी परंपरा के विकास को पर्याप्त गति प्रदान की।

अच्छा है

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ड़) नाटककार रामकुमार वर्मा

प्रसाद के पश्चात जिन नाटकों नाटककारों को सम्मान से याद किया जाता है उनमें रामकुमार वर्मा एक हैं। रामकुमार वर्मा प्रसाद के द्वारा आगे बढ़ायी गयी ऐतिहासिक नाटक परंपरा को ही अपनाते हैं, जहाँ वे मोहन राकेश के निकट प्रतीत होते हैं।

रामकुमार वर्मा ने अनेक नाटक लिखे जिनमें प्रमुख हैं - अशोक का शोक, शिवाजी, जय आदित्य, जय वर्धमान, जय बांग्ला, तुलसीदास आदि प्रमुख हैं। गौरतलब है कि रामकुमार वर्मा ने इन नाटकों में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का प्रयोग किया है, किन्तु उनका उद्देश्य इतिहास का प्रदर्शन करना नहीं है, बल्कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से रचनात्मक ऊर्जा ग्रहण कर वर्तमान समस्याओं के समाधान की राह तलाशनी है। इस प्रकार वे मोहनराकेश

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के 'आषाढ़ के एक दिन' व 'लहरों के राजहंस' की तरह उपयोगितावादी दृष्टिकोण रखते हैं और आधुनिक शहरी मध्यवर्गीय व्यक्ति की जीवनसमस्याओं को उठाते हैं। इनके जरिये रामकुमार सांस्कृतिक ऊर्जा सी लोगों के बीच फैलाना चाहते हैं।

शिल्प के स्तर पर वर्मा सधी हुई भाषा, कसा हुआ कथानक, स्वतंत्र व्यवहार करते चरित्र, चुस्त व चुटीले संवाद का प्रयोग करते हैं। उनके नाटक दृश्य, ध्वनि, रंग, प्रकाश जैसे तकनीकों के कारण रंगमंच के अनुकूल हैं।

इस प्रकार रामकुमार वर्मा हिन्दी नाटकों को सामाजिकों से जोड़ने का महती प्रयास करते नजर आते हैं, जो उनकी सार्थक नाट्यकर्म के कारण ही हो सका है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) कोणार्क नाटक पर नाट्यवस्तु एवं रंगमंचीयता की दृष्टि से विचार कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोणार्क धर्मवीर भारती का नाटक है जो अपनी नाट्यवस्तु तथा ~~रंगमंचीय~~ रंगमंचीय विशेषताओं के कारण हिन्दी नाटक परंपरा में अपना विशेष महत्व रखता है। इस नाटक के माध्यम से रचनाकार ने तत्कालीन एवं वर्तमान युग की कई अहम समस्याओं पर चिंतन प्रकट किया है।

कोणार्क नाटक के प्रमुख पुत्रद्वार विशू तथा उसका पुत्र धर्मपद हैं। इन दोनों पात्रों के माध्यम से विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों की अवतारणा की गयी है। वस्तुतः इस नाटक की प्रमुख संवेदना है- एक कलाकार का सर्जनात्मक द्वंद्व। विशू एक कुशल कलाकार है जो अपने जीवन को कलात्मक ही लीपित रखना चाहता है, उसे राज्य एवं समाज की स्थिति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

से कोई मतलब नहीं है। वहीं धर्मपद इसके विपरीत दृष्टिकोण वाला कलाकार है, जिसका मानना है कि एक कलाकार की जिम्मेदारी सिर्फ ~~अपनी~~ अपने कलाकर्म तक सीमित नहीं होती बल्कि युग परिवेश की स्थितियों के प्रति भी जवाबदेहिता होती है। यही कारण है कि राज्य पर संकट आते ही धर्मपद मर मिटने को उतारू हो जाता है।

नाटक में विशु के माध्यम से यह बात भी इंगित की है कि एक कलाविद में जितनी सृजनात्मक प्रवृत्ति होती है, उतनी विध्वंसक क्षमताएँ भी। जैसे ही धर्मपद के बारे में विशु को पता चलता है कि वह उसका पुत्र है, तब उसको अपने सामने मरते देख उसकी विध्वंसक क्षमता जाग्रत हो जाती है और वह मंदिर का चुंबक हटाकर सब कुछ ध्वस्त कर देता है। इन दोनों चरित्रों के जरिये वर्तमान समय के पीढ़ीसंघर्ष व अंतराल को स्पष्टतः देखा जा सकता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कोणार्क अपनी रंगमंचीयता के कारण भी ख्यातिलब्ध है। रंगमंचीय दृष्टि से ~~अपधर्म~~ बनाने के लिए लेखक ने नाटकीय तत्वों का सफलता से प्रयोग किया है। नाटक की भाषा की सहजता व सरलता अभिनेता को आसानी से अपनी बात दर्शक तक पहुँचाने का मौका देती है। यहाँ न तो ~~व्यक्तियों~~ चरित्रों की भीड़ है और न ही इतनी कमी कि भावक लगातार एक चरित्र को देखते हुए ऊब जाए। नाटक में मंदिर का ध्वस्त होना, युद्ध होना जैसे कुछ एक दृश्य ही कठिन हैं, बाकी जगह दृश्यांकन में ~~का~~ निर्देशक को कोई समस्या नहीं आती।

कुल मिलाकर कहा जाए तो 'कोणार्क' नाटक प्रसाद की तरह 'नाटक के अनुसार रंगमंच' तैयार करने वाला नहीं, बल्कि मोहन राकेश के 'रंगमंच के लिए नाटक' वाली प्रवृति के अधिक निकट है। यही

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कारण है कि आधुनिक रंगमंचों पर इसका प्रदर्शन बड़े औदात्य से किया जाता है।

Good 11½ / 20

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास, जार्ज ग्रियर्सन और मिश्रबंधु के योगदान पर प्रकाश डालिए। 30

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन की परंपरा अत्यंत समृद्ध रही है, जिसमें नाभादास से लेकर शिवसिंह, तासी से लेकर शुक्लजी, व डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी से लेकर बच्चन सिंह आदि तक यह परंपरा जारी है और वर्तमान में कई अन्य दृष्टियों से व्याख्याओं के प्रयास जारी हैं।

नाभादास :

नाभादास समर्पित साहित्येतिहास लेखक नहीं हैं। उन्होंने साहित्य की समीक्षा को लेकर कोई इतिहास लेखन नहीं किया है, बल्कि अपने समय के भक्त कवियों की सूची भी तैयार की है। इन भक्त कवियों में कबीर, रैदास, पीपा, पन्ना, मीरा, गुरु गोविन्द सिंह आदि का जिक्र किया है। नाभादास ने इन भक्तों के संदर्भ में अलौकिक किस्म की कथाएँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

व चमत्कारों का जिक्र किया है। कबीर, मीरा आदि की कुछ कविताओं का संकलन भी मिलता है।

जार्ज ग्रियर्सन ⇒

~~जॉर्ज ग्रियर्सन ... है, जिन्होंने~~

जॉर्ज ग्रियर्सन गार्सा द तासी के पश्चात इतिहासलेखन में योगदान देने वाले दूसरे साहित्येतिहासकार हैं, जिन्होंने 'द वर्नाक्यूलर लिटरेचर ऑफ द नॉर्दर्न इंडिया' नामक ग्रंथ लिखा। इस ग्रंथ के माध्यम से उन्होंने उत्तर भारत में प्रचलित भाषाओं के कवियों के बारे में कुछ प्रामाणिक जानकारियाँ उपलब्ध कराई हैं। जिसकी अहम विशेषताएँ निम्न हैं -

① उन्होंने हिन्दी के कवियों की सूची बनायी है, जिन्हें उन्होंने जाति व धार्मिक आधार पर वर्गीकृत किया जाता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) ग्रियर्सन के साहित्येतिहास लेखन पर उनकी औपनिवेशिक दृष्टि हावी होती दिखाई देती है। उन्होंने उर्दू साहित्य की तुलना में हिन्दी साहित्य को कमतर आँका है। तथा उर्दू भाषा को हिन्दी के बजाय अधिक सर्जनात्मक क्षमता युक्त बताया है।

(3) ग्रियर्सन ने विद्यापति की घोर अश्लील कविताओं को भी भक्ति प्रधान घोषित किया है।

(4) इनका ऐतिहासिक बोध कमजोर प्रतीत होता है।

मिश्र बंधु ⇒

मिश्र बंधुओं ने हिन्दी परंपरा के पूर्ववर्ती लेखकों की प्रमाणिक तरीके से बेहद विस्तृत सूची बनाई। उन्होंने दो ग्रंथ लिखे, जिनमें पहला 19वीं सदी की शुरुआत में तथा दूसरा 1930 के पास।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

~~मिश्र~~ मिश्रबंधुओं के साहित्येतिहास की प्रमुख विशेषताएँ हैं -

(1) कवियों के बारे में प्रामाणिक सूची उपलब्ध कराना, ~~जिनकी~~ उन्होंने शिवसिंह सेंगर ~~के~~ के ग्रंथ से मदद ली। शुक्ल जी ने भी मिश्र बंधुओं के ग्रंथ से कवियों को ग्रहण किया।

(2) मिश्र बंधुओं का भी इतिहास बोध कमजोर प्रतीत होता है। यद्यपि चंदबरदाई के पृथ्वीराज रासो की प्रामाणिकता के संदर्भ में ठोस तर्क भी दिए हैं।

(3) इन्होंने आदि काल की विशेष काव्य प्रवृत्ति दृष्टिगत न होने के कारण 'प्रारंभिक काल' जैसा निर्विशिष्ट नाम दिया।

कुल मिलाकर नासदास, ग्रियर्सन व मिश्र बंधुओं का इतिहास बोध भले ही कमजोर रहा हो, किन्तु आगे के समर्थ इतिहासकारों ने इनके ग्रंथों का संदर्भ के रूप में इस्तेमाल किया।

17/30

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'सूफी दर्शन' पर प्रकाश डालिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'सूफी दर्शन' भक्ति काल की ज्ञानाश्रयी धारा का दार्शनिक आधार रहा है, जिसके आधार पर जायसी, कुशरो, मंझन जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं की रचा।

सूफी दर्शन की प्रमुख विशेषताओं को निम्न बिंदुओं के भीतर समझा जा सकता है -

(1) सूफी दर्शन का आधार है - 'तसव्वुफ़' की धारणा। यह वह स्थिति है जब बंदा खुदा से एक हो जाने का प्रयास करता है। सूफी दर्शन में बंदा इश्क मजाजी से यात्रा शुरू कर इश्क हकीकी तक पहुंचता है और वहाँ जाकर 'अन अल हक' की अवस्था में पहुँच जाता है और खुदा-बंदा एकत्व की अनुभूति करता है। इस बिंदु पर आकर बंदा खुदा से कहा ही जाना चाहता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(2) सूफी दर्शन में खुदा के अपने इष्ट तक पहुंचने की विभिन्न अवस्थाएँ हैं, जिनमें 'मारिफ़त' सबसे ऊपर की अवस्था है जहाँ बंदा खुदा के एकत्व को अनुभूति ग्रहण करता है।

(3) सूफी दर्शन के आधार पर कवि स्वयं को प्रेमी के रूप में प्रदर्शित करता है और खुदा को प्रेमिका के रूप में। और यहाँ से "मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी" का आशय लेता है अर्थात लौकिक प्रेम के माध्यम से खुदा का एकत्व पाने का प्रयत्न करता है।

(4) 'सूफी दर्शन' हिन्दी साहित्य परंपरा में इसलिए अहम है क्योंकि इसमें समन्वय की विराट चेतना छिपी हुई है। इसका मुख्य आधार इस्लाम धर्म है, जहाँ बंदे को खुदा से प्रेम करने की इजाजत नहीं है। इस प्रेम तत्व को उन्होंने भारतीय परंपरा से ग्रहण किया है। 'अनलहक' की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक्त न लिखें।
(Please do not write anything except question number this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

धारणा शंकर 'अहं ब्रह्मास्मि' से प्रेरित है। इसके अलावा पश्चिम के नव प्लेटोवाद का सीमित प्रभाव भी सूफी दर्शन में निहित है।

कुल मिलाकर सूफी दर्शन ने इस्लाम की कठोरता को दूर कर बंदे को खुदा से मिलने के लिए प्रेम जैसे तत्व को स्वीकार करने के अनुकूल बनाया है।

7/20

मार्गदर्शिका में दिये गये मॉडल उत्तर देखें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी कहानी के विकास में कृष्णा सोबती के महत्त्व को रेखांकित कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृष्णा सोबती नवलेखन के दौर की अग्र नेत्री हैं। उन्होंने नारी लेखन से जुड़ी धारा में भी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। वे नई कहानी आंदोलन में महिलाओं का पूर्ण प्रतिनिधित्व करती हैं।

कृष्णा सोबती का सर्वाधिक महत्व जिस रचना के कारण है, वह है - मित्रो मरजानी। इस रचना के माध्यम से उन्होंने कहा है कि किसी व्यक्ति की नैतिकता सिर्फ एकनिष्ठ यौन भावना से नहीं जुड़ी बल्कि समाज के प्रति निभाये दायित्वों से तय होती है। मित्रो मरजानी को हिन्दी की सर्वाधिक 'बोल्ड' कहानियों में गिना जाता है। इसमें परंपरागत यौन नैतिकता के ढांचे को तोड़ते हुए ऐसे यौन दृश्यों को चित्रित किया है, जिन्हें निदर्शित करने में परंपरागत लेखक मुँह मोड़ लेता।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृष्णा सोबती ने नारी मन के 'ओगे हुए यथार्थ' को बेहद प्रामाणिकता से उकेरा है। 'बादलों के घेरे' भी उनकी ऐसी ही कहानी है।

कृष्णा सोबती का महत्व उनकी विषयगत वैविध्यता को लेकर भी है। उन्होंने 'आजादी शब्दोजान की' के माध्यम से जहाँ नारियों की समस्याओं को बताया है, वहीं 'डरो मत', 'मैं तुम्हारी रक्षा करूँगी' के जरिये देश विभाजन की त्रासदी एवं उसके महिलाओं पर पड़ने वाले प्रभाव को उकेरा है।

कृष्णा सोबती का महत्व जिस अन्यतम कारण से है, वह है - भाषा को लेकर। उन्होंने जिस साफगोई व बोल्डनेस से युक्त हो अपनी बात रखी है, उसके पीछे उनकी भाषा है, जिसमें पंजाबी भाषा के शब्दों का खूब प्रयोग किया है। पंजाबी संस्कृति को हिन्दी साहित्य के निकटलाने का भागीरथ प्रयास उन्होंने किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में संख्या के अतिरिक्त न लिखें। (Please do not anything except question numbe this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

'पंजाबी मिश्रित हिन्दी' का निर्माण में उनका विशिष्ट योगदान है।

कुल मिलाकर, कृष्णा सोबती का हिन्दी साहित्य में वही स्थान है जो पश्चिम में 'द सैकेन्ड सेक्स' की लेखिका 'सिमोन द बोउवर' का। उनका भाषा को दिया योगदान भी उल्लेखनीय है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के महत्त्व के कारण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'ध्रुवस्वामिनी' प्रसाद की कालजयी रचना है, जो उनकी परिपक्व नाटककला का नमूना है। 'चंद्रगुप्त', 'स्कंदगुप्त' जैसे नाटक में वे नारी को महत्व देते हुए भी उसे स्वतंत्र चरित्र प्रदान नहीं कर पाते हैं, किन्तु ध्रुवस्वामिनी में वे यह काम करते हैं।

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक प्रसाद की नारी पर लिखी गयी महत्वपूर्ण कृति है। इस नाटक की नायिका ध्रुवस्वामिनी को प्रसाद देवसेना से इतर दृष्टिकोण से देखते हैं। ध्रुवस्वामिनी 'देवसेना' तथा 'कामायनी' की तरह उनके द्वारा महत्व न दिये जाने पर हमेशा उनकी तरह निश्चल रूप से एकनिष्ठ नहीं रहती, बल्कि अपने पति से सामंजस्य न बैठने पर अपना रास्ता स्वतंत्र

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चुनने की तलाश करती है। नायिका अपने पति से अलग रहने लगती है। यह दृष्टिकोण प्रसाद जैसे रोमानी व ~~अपर~~ आध्यात्म मूलक प्रेम दृष्टि वाले रचनाकार के लिए महत्वपूर्ण है।

ध्रुवस्वामिनी का ~~मिलन~~ महत्व

नायिका के अंतर्द्वंद्व के विश्लेषण में भी है। प्रसाद ने बेहद सूक्ष्मता से नायिका की मन की गाँठों को खोला है।

शिल्प के स्तर पर भी 'ध्रुवस्वामिनी' प्रसाद का पूर्ण प्रतिनिधित्व करती है। इसकी भाषा बेहद उच्च किस्म की व ~~पूर्ण~~ सुरुचिसंपन्न है। नारी पात्र ~~यहाँ~~ यहाँ कोमलता व दीवता से भी अधिकशक्तिशाली नजर आते हैं। रंगमंचीय तत्वों की दृष्टि से भी यह कहानी विशेष है। इसका रंगमंच उतना कठिन नहीं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

है, जितना स्कंदगुप्त या चंद्रगुप्त का। क्योंकि यहाँ 'स्कंदगुप्त के सेना सहित बाढ़ में बह जाने' जैसे जटिल दृश्य नहीं है। चरित्रों की भी यहाँ उतनी भीड़ नहीं है जितनी स्कंदगुप्त में। पर्याप्त रंग संकेतों से निर्देशों की मंचन में और भी सुविधा मिलती है।

कुल मिलाकर, 'ध्रुवस्वामिनी' ऐतिहासिक आवरण ओढ़कर भी वर्तमान नारी (विशेषत: तत्कालीन नारी) का दोहरा यथार्थ प्रतीकात्मक वर्णन प्रस्तुत करती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation